• श्रीश्रीगुरुगौराङ्गौ जयतः •

स वै पुंसां परो धर्मो यतो भक्तिरधोक्षजे ।
अहैतुक्यप्रतिहता ययात्मा सुप्रसीदति ।

धर्मः स्वनुष्ठितः पुंसां विष्वक्सेन कथासु यः ।
नोत्पादयेद् यदि रतिं श्रम एव हि केवलम् ।

भागवत-पत्रिका

सर्वोत्कृष्ट धर्म है वह जो आत्मा को आनन्द प्रदायक ।
भक्ति अधोक्षज की अहैतुकी विघ्नशून्य अति मंगलदायक ॥

सब धर्मों का श्रेष्ठ रीति से पालन करते जीव निरन्तर ।
किन्तु हरि-कथा-प्रीति न हो श्रम व्यर्थ सभी केवल बंधनकर ।

वर्ष १४ | गौराब्द ४८२, मास—नारायण ११, वार—वासुदेव
रविवार, २९ अग्रहायण, सम्वत् २०२५, १५ दिसम्बर १९६८ | संख्या ७

श्रीराधिकाष्टोत्तरशतनाम-स्तोत्रम्

(श्रीश्रील रघुनाथदास गोस्वामि विरचितम्)

गोविन्दमार्जितोद्दामरतिप्रस्विन्नसन्मुखा ।
विशाखावीजित क्रीड़ाश्रान्ति निद्रालुविग्रहा ॥४०॥

९७. गोविन्दमार्जितोद्दामरतिप्रस्विन्नसन्मुखा अर्थात् अत्यन्त तीव्र और स्वेच्छा-मयी शृङ्गार-केलिमें जिनका मुख घर्माक्त (पसीनायुक्त) होने पर श्रीकृष्ण स्वयं उसे मार्जित करते हैं, और ९८. विशाखावीजित क्रीड़ाश्रान्ति निद्रालुविग्रहा अर्थात् क्रीड़ाके अन्तमें श्रमवशतः निद्रायुक्त जिनके शरीरको विशाखासखी चामर व्यजन द्वारा स्वस्थ कर श्रमको दूर करती हैं ॥४०॥

गोविन्दचरणन्यस्त कायमानसजीवना ।
स्वप्राणार्बुद तिर्मञ्छय हरिपादरजःकणा ॥४१॥

९९. गोविन्दचरणन्यस्त कायमानसजीवना अर्थात् जिनके काय (शरीर), मन और जीवन आदि सभी कुछ श्रीकृष्णके चरणोंमें समर्पित है, और १०९. स्वप्राणार्बुद निर्मञ्छय हरिपादरजःकणा अर्थात् जो अपने असंख्य प्राणों द्वारा श्रीकृष्णके पादपद्मों की निर्मञ्छना (आरति) करती रहती हैं ॥४१॥

अणुमात्राच्युतादर्श शप्यमानात्मलोचना ।
नित्यनूतन गोविन्दवक्त्र शुभ्रांशुदर्शना ॥४२॥

१०१. अणुमात्राच्युतादर्श शप्यमानात्मलोचना अर्थात् क्षणकालके लिए भी श्रीकृष्ण-दर्शन न पाकर जो अपने नेत्रोंको धिक्कार देती हैं और १०२. नित्यनूतन-गोविन्दवक्त्र शुभ्रांशुदर्शना अर्थात् जो अपने प्राणप्रिय श्रीगोविन्दके श्रीमुखचन्द्रका नित्य नवीन की तरह दर्शन करती रहती हैं ॥०२॥

निःसीम हरिमाधुर्यसौन्दर्याद्येकभोगिनी ।
सापत्न्यधाम मुरलीमात्रभाग्यकटाक्षिणी ॥४३॥

१० . निःसीम हरिमाधुर्यसौन्दर्याद्येकभोगिनी अर्थात् जो निरूपम श्रीकृष्णके सौन्दर्यमाधुर्यादिका स्वयं एकमात्र भोग करती हैं, और १०४. सापत्न्यधाम मुरलीमात्र-भाग्यकटाक्षिणी अर्थात् जो सापत्नी तुल्य मुरलीके एकमात्र भाग्यके प्रति तीव्र कटाक्षपात करती हैं ॥४३॥

गाढ़बुद्धिबलक्रीड़ाजित वंशीविकर्षिणी ।
नर्मोक्तिचन्द्रिकोत्फुल्ल कृष्णकामाब्धिवर्द्धिनी ॥४४॥

१०५. गाढ़बुद्धिबलक्रीड़ाजित वंशीविकर्षिणी अर्थात् जो अपनेको आकर्षित करनेवाली श्रीकृष्णकी मुरलीको प्रगाढ़ बुद्धि और सबल बुद्धि द्वारा पराजय की हुई हैं और १०६. नर्मोक्तिचन्द्रिकोत्फुल्ल कृष्णकामाब्धिवर्द्धिनी अर्थात् जो अपनी सुमधुर नर्मोक्तिरूप चन्द्रिकाद्वारा श्रीकृष्णके प्रफुल्ल कामसागरको अत्यन्त वर्द्धित करती हैं ॥४४॥

व्रजचन्द्रेन्द्रियग्राम विश्राम विधुशालिका ।
कृष्णसर्वेन्द्रियोन्मादिराधेत्यक्षरयुग्मका ॥४५॥

१०७. व्रजचन्द्रेन्द्रियग्राम विश्राम विधुशालिका अर्थात् जो वृन्दावनचन्द्र श्रीकृष्ण के इन्द्रियग्रामको चन्द्रशालिका अर्थात् ऊपर स्थित क्षुद्रग्रह तुल्य हुई हैं और १०८. जिनके 'राधा' नामके 'रा' एवं 'धा'—ये दो अक्षर श्रीकृष्णके सर्वेन्द्रियोंको उन्मादित कर देते हैं ॥४५॥

इदं श्रीराधिकानाम्नामष्टोत्तरशतोज्ज्वलम् ।
श्रीराधालम्भकं नाम स्तोत्रं चारु रसायनम् ॥४६॥

श्रीमती राधिकाजीके इस अष्टोत्तरशतसंख्यक अति उज्ज्वल और श्रीराधिकाजी की प्राप्तिके कारणस्वरूप मनोहर और इन्द्रियरसायन नामावलीरूप अद्भुत स्तोत्र ॥४६॥

योऽधीते परम प्रीत्या दीनः कातरमानसः ।
स नाथामचिरेणैव सनाथामीक्षते ध्रुवम् ॥१७॥
॥ इति श्रीराधिकाष्टोत्तरशतनाम समाप्तम् ॥

जो व्यक्ति अत्यन्त प्रीतिके साथ और अत्यन्त कातर होकर दीनहीनताके साथ अध्ययन करता है, वह निश्चय ही वृन्दावनकी स्वामिनी श्रीमती राधिकाजीका वृन्दावनके स्वामी श्रीकृष्णके साथ शीघ्र ही दर्शन करता है ॥४७॥

॥ इति श्रीराधिकाके अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र समाप्त ॥

सूत्र-विद्वेष

(गताङ्कसे आगे)

निन्दां कुर्वन्ति ये मूढ़ा वैष्णवानां महात्मनां ।
पतन्ति पितृभिः सार्द्धं महारौरवसंज्ञिते ॥

अर्थात् जो मूर्ख व्यक्ति वैष्णवोंकी तथा महात्माओंकी निन्दा करते हैं, वे अपने पितृ-वर्गके साथ महारौरव नरकमें पतित होते हैं।

वैष्णवविद्वेषी जीवोंका महारौरव नरकसे उद्धार करनेके लिए एवं उनके पितृपुरुषोंको भी नरकमें गिरनेसे बचानेके लिए महाकरुणा-वारिधि श्रीचैतन्यमहाप्रभु के चरणाश्रित ऐकान्तिक गौड़ीय भक्तोंने पृथिवीमें सर्वत्र ही निर्गुण भगवन्निकेतनरूप श्रीगौड़ीय मठोंकी स्थापना की है। इन मठोंका मूल उद्देश्य क्या है—इसे समझनेकी शक्ति केवल आत्मज्ञान सम्पन्न ब्राह्मणोंकी ही है, असूयापूर्ण सङ्कीर्ण विचारवाले व्यक्तियोंकी नहीं है। इस बातको जानकर अथवा सुनकर भी कुछ व्यक्ति अक्षज-ज्ञानवादियोंकी तरह विवर्त्तवादका अवलम्बन कर गौड़ीयमठका दर्शन साधारण प्राकृत वस्तु की तरह करते हुए निन्दा करते रहते हैं। ऐसी चेष्टा किस श्रेणीके व्यक्ति लोग करते हैं, यह पाठकवर्ग धीरताके साथ निरपेक्ष होकर विचार करें। 'भारतवर्ष'के तथाकथित लेखककी धारणागत श्रीगौड़ीय मठ प्रजल्पकारी समिति या संस्था मात्र नहीं है; यह बात जान सुनकर तथाकथित लेखकने श्रीगौड़ीय मठके पास रहते हुए भी अपने क्षुद्र स्वभावका परिचय दिया है। 'भारतवर्ष' के वैशाख अङ्कमें उन्होंने अपना मत इस प्रकारसे प्रकाश किया है—"किन्तु वर्त्तमानकालमें ब्राह्मण बनना बड़ा ही सहज है; थोड़ा सा सूत चरका चलाकर या पुराने कपड़ेको फाड़कर ही हो, गलेमें झुलाने से ही पर्याप्त है। मेरे घरके पास एक गौड़ीय मठ नामक समिति है। वहाँ सूत्रको गलेमें झुलाकर जिस किसी व्यक्तिको जब तब ब्राह्मण बनाया जा रहा है।"

गौड़ीय मठके पड़ोसी घरके मालिक होकर भी उक्त लेखकने मठके सम्बन्धमें जो उक्त धारणा की है, वह पृथिवीके सात आश्चर्योंके पश्चात् आठवाँ आश्चर्य है। वे कौन हैं, मठके किस तरफ उनका घर है, हम यह बात आज तक निरूपण नहीं कर पाये। अंडी तेलके यन्त्रकी धुआँसे (अर्थात् विचार बुद्धिरहित स्थूलदृष्टि रूप अज्ञानसे) उनका इन्द्रियज ज्ञान बहुत कुछ विकृत हो गया है; यह बात प्रत्येक सत्यप्रिय व्यक्ति स्वीकार करनेके लिए बाध्य है।

एक व्यक्ति कमलको ढूढ़ने जाकर उसके नालको ही देख पाया। एक वृद्धा महिला,

जिसकी आँखोंकी दृष्टि क्षीण हो गई थी, जगन्नाथजीका दर्शन करने पुरी गई। वहाँ जाकर उसने मन्दिरोंके विशाल शिखरों और अट्टालिकाओंके दर्शन किये। किन्तु उन्हें देखकर उसे भगवानका स्मरण होना तो दूर रहा, उल्टे उसे अपने घरके छतके ऊपर लगाये गये पुँई शाककी लताकी याद आ गई। एक नरहत्याकारी मनुष्य एक व्यक्तिकी हत्या कर फरार हो गया; किन्तु जाग्रत या स्वप्नकी अवस्थामें सब समय उसे यही जान पड़ता था कि मानो उसे वह मृत व्यक्ति पकड़नेके लिए आ रहा है। चमार अपने चमड़ेके द्वारा ही सब बातों को समझनेकी चेष्टा करता है। वनस्पतिके सम्बन्धमें ज्ञानसम्पन्न व्यक्ति जैसे वृक्षलताओं का दर्शन करता है, वैसा दर्शन दूसरा अज्ञानी व्यक्ति नहीं कर पाता। नास्तिक व्यक्ति ईश्वर की आलोचना करने जाकर जागतिक वस्तुओं के अधीन हो पड़ते हैं। मरीचिकामें जलभ्रान्ति, रज्जुमें सर्पभ्रान्ति आदि विवर्त्तवादके उदाहरणोंको हमारे देशके मूर्ख किसान लोग भी भली प्रकारसे समझ सकते हैं। किन्तु जड़-विलासप्रमत्त असत्यकी स्थापना करनेवाले मदोन्मत्त व्यक्ति समझनेमें सर्वथा असमर्थ हैं। शाक-सब्जी बेचनेवाला व्यक्ति या पाटका व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति अपने-अपने व्यवसायके बारेमें अच्छी तरह कह सकता है। किन्तु आत्मविद् व्यक्तियोंको भी एक साधारण व्यक्ति समझकर उनके ऊपर अयथा दोषारोप करनेसे वास्तविक सत्यकी मर्यादा नहीं रह जाती। एक विधवा महिलाने अपना सर्वस्व देकर अपने पुत्रको लिखना-पढ़ना सिखलाया था। लड़केने पहले दर्जेमें अंग्रेजीकी प्रथम पुस्तक पढ़ी थी। उस महिलाने देखा कि ऊँचे दर्जेमें पहुँचने पर भी लड़केको उस 'ए. बी. सी. डी' सम्बन्धित बातें ही पढ़ायी जाती हैं। यह देखकर उसने हाथमें झाड़ु लेकर उसे फटकारा और भूमिपर सिरको ठोकते हुए कहने लगी—"मैंने कितना कष्ट स्वीकार कर और भगवानके पास कितनी प्रार्थना कर अपना सर्वस्व देकर भी तुम्हें लिखना-पढ़ना सिखलाया। तुम कहते हो कि मैं कालेजमें पढ़ता हूँ; किन्तु मैं देखती हूँ कि आज तक तुम अपने प्रथम पुस्तकको भी समाप्त नहीं कर पाये।" ऐसा कहते-कहते वह अपने माथे पर बारम्बार कराघात करने लगी। हमारे उक्त लेखक महाशयका गौड़ीय मठ-दर्शन और मठके सम्बन्ध में धारणा भी वैसी ही है। उन्होंने कपड़ेके फाड़े हुए टुकड़े या चरकासे काते हुए सूते को ही वाजसनेय् वैदिक शाखाकी सूत्रधारणविधि समझ लिया है। उन्हें और क्या दोष दें? आधुनिक समयमें कोई-कोई व्यक्ति एकायन शाखासे अपने को पृथक् मानते हुए परमहंस वेष दिखलानेका प्रयास करते हैं। ऐसा कर वे लोग अवैध पापोंमें लिप्त होकर स्त्री-शूद्र जैसा व्यवहार प्रदर्शन करते हैं। इस प्रकार उन लोगोंने सत्यके आदर्शको दुविधामें डाल दिया है। जो व्यक्ति मिश्रीमें और मुड़ि (मुरमुरे) में पार्थक्य समझ नहीं पाते, वे लोग कितना

ही अनावश्यक वाक्य व्यय करते हुए समयका दुरुपयोग करते हैं । मठके पासमें रहनेका परिचय देनेकी अपेक्षा पाठशालामें पढ़नेवाले लड़कोंकी तरह या विश्वविद्यालयके उच्च-शिक्षित व्यक्तियोंकी तरह भली प्रकारसे गौड़ीय पत्रिकाका पाठ करनेसे अधिक लाभ होगा । ऐसा करने पर बच्चोंके भूत देखनेकी तरह वे गौड़ीय मठको को कोई डरावनी वस्तु नहीं समझते ।

समाजके सम्बन्धमें आलोचना करनेके उद्देश्यसे बिना किसी गुरुके अपने आप अष्टादश स्मृतिशास्त्र, पञ्चरात्र, गृह्य श्रौतादि सूत्रसमूह, पुराण-इतिहास आदि ग्रन्थोंका अपनी तार्किक बुद्धिके बल पर अध्ययन कर खिलवाड़ करनेके लिये रङ्गमञ्चमें न उतरनेसे ही अच्छा रहता । सामाजिक बातोंकी मीमांसादि और धर्मसमाज की सूक्ष्म बातोंको या व्यवहारादिको बिलकुल न जानकर श्रौतपथावलम्बी वैष्णवोंको कर्म-जड़ ब्राह्मण समझना उनकी विद्याबुद्धि और विश्वसमाजकी सहानुभूति पर व्याघात करने-वाली बात है । भगवानकी सेवाको छोड़कर श्रीगौड़ीय मठवासियोंका और कोई दूसरा कर्त्तव्य नहीं है । तब मठवासियोंको अक्षज ज्ञानवादी, कर्मयोगी, या ग्राम्यवार्तावह पत्रिकाके लेखकके समान समझकर चुटकी लेते हुए उनकी समालोचना न करनेसे ही अच्छा रहता । अपनी योग्यतागत अधिकारको छोड़कर अपनेको आदर्श समझते हुए इस प्रकारसे वाचालता करना उनके लिए उचित साबित नहीं हुआ । अपने अनुचित दर्शनसे वे स्वयं संकटमें पड़ गये हैं । चरकाके काते हुए सूत्र धारण करनेवाले व्यक्तियोंके निकट अना-दिकाल शास्त्र अध्ययन कर वे अपने चरित्रका संशोधन करते हुए वास्तविक रूपसे उन्नत हो भी सकते थे । उसके विपरीत उन्होंने आरोह-वादका अवलम्बन करते हुए भ्रम, प्रमाद, विप्रलिप्सा, करणापाटव आदिके बलपर जिस मार्गको ग्रहण किया है, उसके द्वारा वे एक ब्राह्मण विद्वेषी नैष्ठिक शूद्र साबित हुए हैं। जो व्यक्ति स्वभावसिद्ध ब्राह्मणोंसे ऐसा विद्वेष रखते हैं, उनके प्रति सत्य वस्तु परमेश्वर भगवान नितान्त नाराज हैं । इस जन्ममें वे किसी प्रकारसे सत्यका अनुसन्धान करेंगे—यह आशा नहीं की जा सकती । किन्तु वैष्णव-के चरणामृतकी ऐसी महिमा है कि उसके संस्पर्श मात्रसे सभी शत्रुतुल्य दिखलाई देने-वाली वस्तुएँ थोड़े ही समयमें परम मित्रतुल्य बन जाती हैं । उस समय लेखक कथित 'जिस किसीको' अर्थात् आलतू फालतू व्यक्तियोंको भी उनकी तरह असंख्य नरशरीरधारी व्यक्तियोंके नित्य कल्याणकारी साक्षात् ब्रह्म-वस्तु ब्राह्मण गुरुके रूपमें दर्शन करनेका सौभाग्य प्राप्त होगा । उनकी तरह सङ्कीर्ण-बुद्धिवाले अनभिज्ञ व्यक्ति शुद्ध वैष्णवोंकी मर्यादा उल्लंघन करने जाकर कैसे अमार्जनीय अपराधमें पतित हुए हैं, और उस अपराधके फलसे पूर्वपुरुषोंके साथ उनकी कहाँ गति होगी—इस विषयकी चिन्ता करनेसे भी उनकी

अवैध पाप-प्रवृत्ति बहुत कुछ दूर हो सकती है। ब्राह्मण-विद्वेषाग्निको शौक्र परम्परागत विचार द्वारा ईन्धन देकर बढ़ावा देनेसे अपनी ही मान-हानि होगी। ग्राम्य रसप्रियतापरायण व्यक्तियोंकी विचार-प्रणाली द्वारा श्रीगौड़ीय मठकी अप्राकृत विचार-प्रणाली कदापि कलुषित नहीं हो सकती। अपनी उद्दण्डतासे निवृत्त होने पर वे यह समझ सकेंगे कि शौक्र विचार धाराका अनुचित आदर करनेसे ही वैदिक स्वभावसिद्ध विचार धाराको किसी प्रकारसे सहज ही में ठेस पहुँचेगी—ऐसी बात नहीं है। शास्त्रोंके सूक्ष्म विचारोंमें सुष्ठु रूपसे प्रवेश न कर अपने अत्यन्त क्षुद्र शास्त्र-ज्ञानके बलपर गुणहीन व्यक्तियोंको उपाध्यायके रूपमें परिचित कराना शास्त्रीय ब्राह्मणताके विपरीत है। सच्चरित्रताके आधार पर सत्यभाषिता और सरलता लाभ करने पर जीव देवशर्मा बन सकता है। उद्देश्यभ्रष्ट होकर अहङ्कारमें मदमत्त होनेसे तुच्छ कर्मोंमें ही ब्राह्मणता वर्त्तमान है—ऐसी मिथ्या धारणा उदित होगी। इसलिये यदि वेदशास्त्रपर आक्रमण करनेसे कात्यायन सूत्रोंकी महिमा बढ़ जाय, तो इससे कोई लाभ नहीं है; क्योंकि पञ्चरात्रिक विचारानुगत वैष्णव लोग स्वाभाविक ब्राह्मणताके कारण शौक्र परम्परागत व्यक्तियोंके गुरुस्थानीय महापुरुष हैं। कामक्रोधादिके वशीभूत होकर श्रौतपथका विरोध करनेसे केवल विरोधिता ही बढ़ती जायगी। उनकी सामाजिक जीविका-निर्वाह पद्धतिके साथ शास्त्रीय ब्राह्मणताका क्या सम्बन्ध है, मैं समझ नहीं पाया। अपनेसे श्रेष्ठ व्यक्तियोंको अपने समान समझकर आक्रमणका पात्र बनानेसे अपनी शास्त्रीय पारदर्शिताका क्या मूल्य ही रहा? ऐसे कार्य द्वारा भगवानकी नित्यसेवा नहीं हो सकती। उक्त लेखक महोदय केवल जड़ वस्तुओंके ही दर्शन करनेमें समर्थ हैं। गौड़ीय मठकी सभी क्षुद्रातिक्षुद्र वस्तुएँ भी चिन्मय परमार्थ वस्तु हैं। इसलिये उक्त लेखक महोदयकी उद्दण्डता मठके प्राङ्गणस्थित धूलिकणों द्वारा अनायास ही चूर्ण-विचूर्ण हो जायगी।

'जब तब' शब्दका प्रयोग कर लेखक महोदय यह समझ रहे हैं कि उनके द्वारा प्रस्तावित शौक्र-ब्राह्मणत्व ही केवल गौड़ीय मठका एकमात्र लक्ष्य है। किन्तु ऐसी धारणासे गौड़ीय मठकी किसी भी प्रकारसे कोई हानि होनेकी संभावना नहीं है। कात्यायन गृह्यसूत्रोंमें कहा गया है—'अष्टवर्षं ब्राह्मणमुपनयीत'। इस प्रस्तावित ब्राह्मणत्व-प्रणालीका आदर कात्यायन द्वारा किये जाने पर भी स्वभावसिद्ध ब्राह्मणत्वकी सर्वत्र और सर्वकाल ही स्थिति है। बृहदारण्यक, छान्दोग्य आदि उपनिषद् कथित, महाभारत कथित, श्रीमद्भागवत प्रतिपादित और पञ्चरात्र द्वारा प्रकाशित भक्तिमार्ग शास्त्राध्ययनकी छलना द्वारा ग्रहण नहीं किया जा सकता। 'देवशर्मा' नामकी योग्यता प्राप्त कर सत्य जाननेका अधिकार प्रत्येक वैदिक शास्त्रीय ब्राह्मणमात्रको ही है। उनके

साथ शूद्रस्वभावसम्पन्न अनुकरणकारी व्यक्तियोंकी तुलना कर भ्रान्ति पड़ना अनुचित है। अतएव श्रीहरिभक्तिविलासका कथन है—विवादयुगमें (कलियुगमें) ब्राह्मणब्रुवगण वास्तविक विष्णुभक्तोंके शत्रु होकर निकषा-पुत्र रावणको वर्णाश्रम धर्मका गुरु बनायेंगे। शचीके दुलाल (श्रीचैतन्य महाप्रभु) उनके निकट अत्यन्त छोटे हैं। दशरथपुत्र रामचन्द्रजी की पत्नी सीतादेवी विश्रवा-पुत्र रावणके हरण करने योग्य वस्तुविशेष हैं। किन्तु गौड़ीय मठके भक्तगण ऐसे घृणित वर्णाश्रम धर्मका कोई मूल्य नहीं समझते। श्रीमहाभारत, श्रीमद्भागवत आदि ग्रन्थोंमें इस कलियुगोदित वर्णाश्रम धर्मका कोई आदर नहीं किया है। इसलिए स्थूल भौतिक ज्ञान द्वारा मोहित, अचिद् वस्तुओंमें आसक्त, इन्द्रियपरायण नास्तिक व्यक्तियों द्वारा जिस निरीश्वरताको वर्णाश्रम धर्मके रूपमें निरूपण करनेकी प्रथा चली आ रही है, उसके द्वारा जीवोंका किसी भी प्रकारसे नित्य कल्याण नहीं हो सकता।

कोटि-कोटि निरीश्वर ब्राह्मण-जन्मकी अपेक्षा शौक्र कुलोत्पन्न दीक्षित वैष्णवकी ब्राह्मणताकी अपार महिमा सभी शास्त्रोंमें ही प्रचुररूपसे वर्णन की गई है। यही गुणका आदर है। सद्गुणविद्वेषी, विष्णुविद्वेषी, कपटयुक्तिपरायण मूर्ख व्यक्तियोंकी वञ्चनाके लिए जिस अवैध विचारका प्रचार किया जाता है, वह कदापि वर्णाश्रम धर्म कहलाने योग्य नहीं है।

य एषां पुरुषं साक्षादात्मप्रभवमीश्वरम्।
न भजन्त्यवजानन्ति स्थानाद्भ्रष्टाः पतन्त्यधः॥

अर्थात् जो व्यक्ति अपने साक्षात् सेव्य प्रभुरूप भगवानका भजन नहीं करते या उनकी अवज्ञा करते हैं, वे अपने-अपने स्थानोंसे भ्रष्ट होकर पतित हो जाते हैं।

मठवासी वैष्णव लोगोंसे मैं ऐसा आशीर्वाद प्रार्थना करता हूँ जिससे उक्त विषयकी आलोचना कर इस विष्णुवैष्णव विरोधी निन्दक महोदयकी दुष्प्रवृत्तिको मूलसे उखाड़कर जिस किसी व्यक्तिको गौड़ीय मठाश्रित वास्तविक ब्राह्मण बना सकूँ। मठवासी शुद्ध वैष्णवोंका चरणाश्रय ग्रहण करनेसे ही विष्णु विद्वेष और वैष्णवविद्वेष सम्पूर्ण रूपसे नष्ट हो जायेंगे, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

—जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद श्रील सरस्वती ठाकुर

ॐ विष्णुपाद १०८ श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान

केशव गोस्वामी महाराजका नित्य लीलामें प्रवेश

[गत वर्ष १४, संख्या ५ में हमारे परमाराध्यतम श्रीश्रीलगुरुपादपद्म ॐ विष्णुपाद १०८ श्रीश्रीमद्भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजके नित्य लीला प्रवेशके सम्बन्धमें संक्षिप्त विवरण दिया गया है। वर्त्तमान संख्यामें उक्त विषयका आँखों देखा हालका विस्तृत विवरण दिया जा रहा है।]

गत ६-१०-६८ रविवार, शारदीय रास-पूर्णिमाकी पुण्यतिथिमें श्रीश्रीदामोदर व्रतारंभ के दिन, सायंकाल चन्द्रग्रहणके समय ६ बजकर १५ मिनट पर श्रीधाम नवद्वीपके अन्तर्गत श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठमें श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिके प्रतिष्ठाता, श्रीब्रह्ममाध्वगौड़ीय सम्प्रदायैकसंरक्षकवर, श्रीकृष्णचैतन्याम्नायके दसमाधस्तनान्वयवर आचार्य ॐ विष्णुपाद परमहंसस्वामी अष्टोत्तरशतश्री श्रीश्रीमद् भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज अपने चरणाश्रित सेवकवृन्दको तीव्र विरहसमुद्रमें निमज्जित कर स्वेच्छापूर्वक अपने नित्य धाम श्रीगोलोक वृन्दावनमें श्रीश्रीराधाविनोद बिहारीजीकी सायंलीलामें प्रविष्ट हुए हैं। उस अवसर पर श्रीश्रीलगुरुपादपद्मके आश्रित सेवकवृन्द अश्रु विगलित नयनोंसे गद्गद् स्वर से महामंत्र और 'जे आनिल प्रेमधन' प्रभृति विरहसूचक कीर्तन करते हुए श्रीश्रीलआचार्यदेव के कोटिचन्द्र सुशीतल श्रीचरणकमलोंमें विलाप कुसुमाञ्जलि अर्पण कर रहे थे। महाप्रयाणके कुछ समय पूर्व श्रीश्रीलगुरुपादपद्मके इङ्गितसे त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण महाराज 'हरिहरये नमः', 'जय राधे जय कृष्ण', 'श्रीरूपमञ्जरी पद', आदि महाजन पदावलियोंका तथा 'पञ्चतत्त्व' और महामंत्र 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥' का भावविभोर होकर अत्यन्त सुमधुर स्वरसे कीर्त्तन कर रहे थे; त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद् भक्तिवेदान्त वामन महाराज, त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त पर्यटक महाराज, त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त त्रिदंडि महाराज, श्रीस्वाधिकारानन्द ब्रह्मचारी, श्रीमुकुन्दगोपाल ब्रह्मचारी, श्रीकानाईदास ब्रह्मचारी, श्रीकृष्णकृपा ब्रह्मचारी, श्रीवृषभानु ब्रह्मचारी, श्रीशिवनारायण ब्रह्मचारी आदि वैष्णवगण समस्वरसे पीछे-पीछे कीर्त्तन कर रहे थे। श्रील आचार्यदेव भी 'हरे कृष्ण·····हरे राम' और पञ्चतत्त्व आदिका जोरसे स्पष्ट उच्चारण करते जाते थे। उसी समय जगद्गुरु श्रील प्रभुपादजी

का आलेख्य-विग्रह उनके सामने रख दिया गया। उन्होंने भावावेशसे अपने नेत्र संकेतोंसे उनको प्रणाम किया। क्षणभरमें श्रीलआचार्य-देवका वासस्थान श्रद्धालु अन्तिम श्रीचरण-कमल दर्शनार्थियोंसे खचाखच भर गया तथा 'हरे कृष्ण हरे हरे' ध्वनिसे मुखरित हो उठा। इस प्रकार विराट् हरिसंकीर्त्तनके मध्य चन्द्र-ग्रहणयुक्त शारदीय रासपूर्णिमाकी संध्यामें रासबिहारी श्रीकृष्णकी अस्फुट मुरली ध्वनि का संकेत पाकर स्वजन परिजन आदि सबको छोड़कर अकेले ही विरहाकुल होकर नित्य रासस्थली की ओर चल पड़े।

उस समय विरहातुर भक्तवृन्द श्रील गुरु-पादपद्मके समीप जिस प्रकार रोदन करते हुए हरिनामका कीर्त्तन कर रहे थे, उसका भाषा द्वारा वर्णन नहीं किया जा सकता। शीघ्र ही यह निदारुण विरह संवाद भगवती भागीरथी के उभयकुलस्थित सारे गौड़ीय मठोंमें पहुँचने पर श्रीसारस्वत गौड़ीय आसन और मिशनके (श्रीधाम नवद्वीप शाखाके) वर्त्तमान सभा-पति आचार्य त्रिदण्डिस्वामी श्रीश्रीमद्भक्ति श्रीरूप सिद्धान्ती महाराज पधारे तथा अन्यान्य मठोंसे त्रिदण्डि संन्यासीगण और ब्रह्मचारी-वृन्द क्रमशः उपस्थित होने लगे। इधर प्रपू-ज्यचरण त्रिदंडिस्वामी श्रीश्रीमद् भक्ति श्रीरूप सिद्धान्ती महाराजके आनुगत्यमें श्रीश्रीगुरु-गौराङ्ग राधाविनोदबिहारीजीके विशाल मन्दिरके समीप ही हरिसंकीर्त्तन नाट्यमन्दिर के बीचोंबीचसे सटे हुए पश्चिम किनारेकी ओर समाधि-क्षेत्र निरूपित होनेपर श्रीलगुरु पादपद्मके चरणाश्रित त्रिदण्डिपादगण, वेशा-श्रित बाबाजीगण, ब्रह्मचारीवृन्द, गृहस्थ एव वानप्रस्थ भक्तवृन्द समाधि-क्षेत्रकी यथाविधि सेवा श्रीहरिसंकीर्त्तनके माध्यमसे करने लगे।

इसी बीच रात्रिके १२ बजे महासंकीर्त्तन के बीच श्रीश्रीलगुरुपादपद्मके दिव्य कलेवरको माल्य, चन्दन, अगुरु, केशर आदिसे विभूषित कर एक सुन्दर पलंगपर पधराकर त्रिदंडि-पादगण उनके द्वितल वासभवनसे उतारने लगे। उस समय वहाँ उपस्थित सहस्रों नर-नारी भक्तोंके विरह विलाप आदिसे जो अत्यन्त कारुणिक दृश्य उपस्थित हुआ, वह वर्णनातीत है। उस समय श्रीश्रीगुरुगौराङ्ग गान्धर्विकागिरिधारी श्रीश्रीराधाविनोद-बिहारी तथा पूर्वाचार्योंके पुनः पुनः जयघोष, महासंकीर्त्तन, घंटा-कासर-मृदङ्गकी दिव्य ध्वनि दिग्-दिगन्तको भेद करती हुई वृन्दावन से अभिन्न श्रीश्रीगौरधाममें सर्वत्र ही व्याप्त होने लगी। भक्तगण विगलिताश्रुपूर्ण नयनों से तन-मनकी सुधि बिसारकर कोई छत्र धारण कर रहा था, कोई चामर डुला रहा था, कोई शंख वादन कर रहा था, कोई पुष्प-वृष्टि कर रहा था, कोई गुलाब जल अतर छिड़क रहा था; अहा! क्या ही अपूर्व दृश्य उपस्थित हुआ! धीरे-धीरे श्रीश्रीलगुरुपादपद्म को श्रीहरिसंकीर्त्तन नाट्य-मन्दिरके मध्य भाग

में श्रीश्रीगौराङ्ग गान्धर्विकागिरिधारी राधा-विनोदबिहारीजीके सम्मुख रखा गया। उस समय एक ओर जहाँ भक्तमण्डली विरह-सागर के तीव्र तरङ्गोंसे मर्माहत होकर आर्त्तनाद करती हुई डूब-उतरा रही थी, वहाँ श्रीमन्दिर में रसिकशिरोमणि रासबिहारी श्रीश्रीराधा-विनोदबिहारी तथा भक्तचित्तविनोदन निज रूप-लीलादि माधुर्यास्वादनार्थ राधाभाव-कान्ति धारणकारी श्रीलगौरसुन्दररूपी गोपी-वल्लभके अधरोंपर मन्द-मधुर मुसकान खेल रहा था, मानों वे अपनी प्राणप्रिया नीलमंजरी को भौम लीलासे आकर्षण कर आज अपने अप्राकृत चिद्विलास-नित्य रासस्थलीमें आलि-ङ्गन कर विहंस रहे हों।

श्रीश्रीलगुरुपादपद्मका अप्राकृत कलेवर हरिसंकीर्त्तन नाट्यमन्दिरके मध्यमें विराज-मान होनेपर समवेत सहस्रों भक्तजनोंने संकी-र्त्तन करते-करते प्रदक्षिण किये। तदनन्तर उनके चारों ओर बैठकर श्रीश्रीगुरुवैष्णव-वन्दना, श्रीगुरुपरम्परा, श्रीगुर्वष्टक, 'श्रीगुरु-चरणपद्म', 'गुरुदेव कृपाबिन्दु दिया', 'जे आनिल प्रेमधन', 'बड़ कृपा करि गौड़वन माझे', 'गुरुदेव ! कबे मोर सेइ दिन हबे', 'यशोमति-नन्दन', 'श्रीरूपमंजरी पद', 'हरि ! हरि ! कबे मोर हइबे सुदिन', 'गौराङ्ग बलिते हबे पुलक शरीर' आदि कृपा-प्रार्थना एवं विरहसूचक महाजन पदावलियोंका कीर्त्तन किया, तदनन्तर चन्दन, अगरू एवं अन्यान्य सुगन्धित द्रव्योंसे सुवासित गंगाजल द्वारा स्नान कराकर सूक्ष्म नवीन और सुन्दर वस्त्र (डोर कौपीन बहिर्वा-सादि) धारण कराया गया। वैष्णवोंके आदेशसे त्रिदंडिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण महाराजने उनके द्वादश अङ्गोंमें तिलक रचना की; इसके पश्चात् प्रपूज्यचरण परिव्राजकाचार्य त्रिदंडिस्वामी श्रीश्रीमद्भक्ति श्रीरूप सिद्धान्ती महाराजजीने श्रील गोपाल भट्ट गोस्वामीचरण द्वारा रचित संस्कार-दीपिकाके विधानानुसार श्रीलगुरुदेवके श्रीअङ्गों पर चन्दनद्वारा समाधि-मंत्र लिखा। अतः पर त्रिदंडिस्वामी श्रीमद्भक्ति वेदान्त नारायण महाराजने श्रीश्रीलगुरुपादपद्मका विधि-अनु-सार अर्चन-पूजन करके उनकी आरती उतारी।

आरत्रिकके पश्चात् प्रपूज्यचरण त्रिदंडि-स्वामी श्रीश्रीमद्भक्ति श्रीरूप सिद्धान्ती महा-राजने सर्वप्रथम श्रीलगुरुदेवके चरणोंमें सचन्दन पुष्पांजलि प्रदान की; इसके पश्चात् श्रीचैतन्य मठ, श्रीधाम मायापुरसे आगत प्रपूज्यचरण त्रिदंडिस्वामी श्रीश्रीमद्भक्ति कुसुम श्रमण महाराजने श्रील प्रभुपादजीकी प्रसादीमाला उनके श्रीअङ्गोंपर अर्पण कर श्रीचरणोंमें पुष्पांजलि प्रदान की। श्रीगौड़ीय मिशन, बागबाजार कलकत्ताके परिव्राजका-चार्य प्रपूज्यचरण त्रिदंडिस्वामी श्रीमद्भक्ति केवल औडुलोमि महाराजके प्रतिनिधि स्वरूप उनके स्वरूपगंज स्थित श्रीभक्तिसिद्धान्त गौड़ीय मठके श्रीजननिवास ब्रह्मचारी, श्रीनित्यगोपाल ब्रह्मचारी, श्रीशरण्यकृष्णदास ब्रह्मचारी एवं

श्रीफुल्लेन्दुगौराङ्ग ब्रह्मचारीने श्रीश्रीगुरु-गौराङ्ग गान्धर्विकागिरिधारी श्रीश्रीराधा गोविन्दकी प्रसादी माला श्रीअङ्गों पर अर्पण कर श्रीचरणोंमें पुष्पांजलि प्रदान की। श्रीचैतन्य गौड़ीय मठके प्रतिष्ठाता आचार्य प्रपूज्यपाद त्रिदंडिस्वामी श्रीश्रीमद्भक्ति दयित माधव महाराजके प्रतिनिधिके रूपमें श्रीचैतन्य गौड़ीय मठसे श्रीकृष्णकेशव ब्रह्मचारी आदि मठवासी वैष्णवगण, प्रपूज्यचरण त्रिदंडिस्वामी श्रीश्रीमद् भक्ति प्रापन दामोदर महाराज, श्रीगौड़ीय संघके श्रीपाद बनबिहारी बाबाजी महाराज, त्रिदंडिस्वामी श्रीमद्भक्ति अमृत अवधूत महाराज, त्रिदंडिस्वामी श्रीमद्भक्ति अर्णव परमार्थी महाराज आदि, श्रीचैतन्य सारस्वत मठके आचार्य परिव्राजकाचार्य त्रिदंडिस्वामी श्रीश्रीमद्भक्ति रक्षक श्रीधर महाराजके प्रतिनिधिके रूपमें श्रीहरिचरण ब्रह्मचारी, श्रीकृष्णशरण ब्रह्मचारी, श्रीधाम मायापुर चैतन्य मठके श्रीनिताईदास बाबाजी महाराज आदि गुरुजनों एवं वैष्णवगणोंने प्रसादी माला एवं पुष्पांजलि अर्पित का। तदनन्तर श्रीलगुरुपादपद्मके मनोनीत श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिके आचार्य त्रिदंडिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त वामन महाराज, त्रिदंडिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त त्रिविक्रम महाराज, त्रिदंडिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण महाराज, त्रिदंडिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त उर्द्ध्वमन्थी महाराज, त्रिदंडिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त पर्यटक महाराज, त्रिदंडिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त त्रिदंडि महाराज तथा मठस्थ ब्रह्मचारीवृन्द, गृहस्थ एवं वानप्रस्थ वैष्णवगण, उपस्थित श्रद्धालु जनसमूहने उनके श्रीचरणकमलोंमें विरह पुष्पांजलि अर्पित की। तत्पश्चात् तदाश्रित भक्तजनोंने श्रीचरणोंमें अर्पित पुष्प संग्रह कर मस्तक पर धारण किया और उनके चरणामृतका पान किया। मठके अधिकारी वर्गने कुछ अर्पित पुष्प तथा श्रीगुरु-चरणामृतको सावधानीपूर्वक सुरक्षित रखा, जिन्हें पीछेसे अन्यान्य गुरुसेवकों को दिया गया अथवा माँगने पर भेजा गया।

इस प्रकार रात्रिके २-३० बजे श्रीश्रीलगुरुपादपद्मके अप्राकृत कलेवरको कीर्त्तन करते-करते समाधि-क्षेत्रमें पधराया गया एवं बहुमूल्य वस्त्रासनके ऊपर श्रीरूपमंजरी स्मृतिपूर्वक उन्हें विराजमान किया गया। श्रीचरणारविन्दोंमें अगरु-चन्दन अर्पण करके गलेमें पुष्पमालाएँ प्रदान की गईं। तदनन्तर त्रिदंडिपादगण, ब्रह्मचारीवृन्द, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ भक्तगण और उपस्थित विराट जनसमूहने श्रीश्रीलगुरुदेवके गगनभेदी 'जयघोषके साथ कोटिचन्द्रसुशीतल श्रीश्रीलगुरुपादपद्मोंमें पुष्पांजलि प्रदान की। उस समय भी करुणा का समुद्र उमड़ पड़ा, जिसकी उत्ताल तरङ्गोंमें विरही भक्तजन पुनःपुन डूबने उतराने लगे।

इस प्रकार संस्कार-दीपिका एवं महाजन कथित पद्धतिके अनुसार श्रीश्रीगुरुगौराङ्ग राधाविनोदबिहारीजीके निजजन श्रीश्रील

गुरुपादपद्मका सच्चिदानन्दमय श्रीअङ्ग अभिन्न-गोवर्द्धन, श्रीकुलिया पर्वतके सानुप्रदेशकी रास-स्थली श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठमें समाधिस्थ होने पर समाधिक्षेत्रके ऊपर और चारों ओर तुलसीजीका रोपण किया गया और समाधि-पीठ के ऊपर निर्मित मृत्तिका-स्तूपके ऊपर तिलक रचना की गई। वहाँ श्रीश्रीलगुरुपादपद्मका एक सुन्दर आलेख्य-विग्रह स्थापन किया गया। तत्पश्चात् उस स्थानको पुष्पमाला द्वारा सज्जित कर षोडशोपचार द्वारा अर्चन-पूजन, भोगराग एवं आरत्रिक सम्पन्न किया गया। समाधिके चारों ओर तथा ऊपरमें आच्छादन की व्यवस्था की गई।

शेषरात्रिके ४ बजे श्रीश्रीलगुरुपादपद्मकी मंगलारति सम्पन्न होने पर सब लोगोंने कीर्त्तन करते हुए समाधि-मन्दिरकी प्रदक्षिणा कर पुनः पुनः साष्टांग दण्डवत् प्रणाम किया। वैष्णवों-की इच्छासे त्रिदंडिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त उर्द्ध्वमन्थी महाराजने सजल नेत्रोंसे श्रीचैतन्य-चरितामृतसे श्रीहरिदास-निर्याण प्रसङ्गका पाठ किया।

अब विभिन्न मठों, आश्रमों एवं स्थानोंसे कृपापूर्वक श्रीसमाधि-दर्शन करनेके लिए समा-गत वैष्णवाचार्यगण, गुरुजन एवं वैष्णवगण अपने-अपने स्थानोंको गमन करनेके लिए प्रस्तुत हुए। समितिकी ओरसे पूज्यपाद श्रीमद्भक्ति वेदान्त वामन महाराज, पूज्यपाद श्रीमद्भक्ति-वेदान्त त्रिविक्रम महाराज एवं पूज्यपाद श्रीमद्-भक्तिवेदान्त नारायण महाराजने सजल नेत्रोंसे गमन उद्यत वैष्णवोंसे विशेषतः परिव्राजका-चार्य त्रिदंडिस्वामी श्रीश्रीमद्भक्ति श्रीरूप सिद्धान्ती महाराजकी उदारता, कृपापूर्वक पथ-प्रदर्शन और सान्त्वना-दान तथा श्रीपाद वनबिहारी बाबाजी महाराजको समाधि-पीठकी विभिन्न सेवाओंके लिए कृतज्ञता प्रकाश करते हुए उन्हें प्रेमपूर्वक विदा किया। उन वैष्णवोंने भी हम सबको मिल-जुलकर श्रीश्री-लगुरुपादपद्मकी मनोभीष्ट-सेवा एवं जगद्गुरु श्रील प्रभुपादजीकी धारामें श्रीश्रीलगुरुपाद-पद्मद्वारा प्रचारित गौरवाणी—शुद्धा भक्ति प्रचार करनेका उपदेश देकर स्व-स्व स्थानकी ओर प्रस्थान किया।

इधर श्रीश्रीगुरुगौराङ्ग राधाविनोदबिहारी-जीकी मंगलारति, श्रीश्रीमन्दिर, श्रीसमाधि-मन्दिर एवं श्रीवृन्दादेवीकी परिक्रमा, उषाः-कालीन कीर्त्तन, श्रीमद्भागवत–पाठ आदि कार्य यथारीति सम्पन्न होते-होते तिमिरहर श्रीभुवनभास्करदेव विरह-संवाद अवगत होकर शीघ्रगामी रथपर आरूढ़ होकर तुरन्त उपस्थित हुए। परन्तु उनका साक्षात् दर्शन न पाकर विरह सागरमें निमज्जित होकर लाल-लाल कोमल किरणोंके बहाने अरुण पुष्प परागोंकी अंजिल पुनः-पुनः प्रदान करने लगे। सारी रात निरन्तर कीर्त्तन होता रहा। तदन-न्तर वे गुरुप्रेष्ठोंसे कुछ विरही संवादकी प्राप्ति की आशासे मठ-प्राङ्गणमें अपनी किरणसमूह द्वारा इतस्ततः दृष्टिपात करने लगे; परन्तु उन्हें

वे कहां पाते, वे तो अपनी विरह व्यथाको—अविरत विगलित अश्रु धाराओंको छिपानेके लिए अकेले-अकेले निज-निज भजन-कुटीमें मुख ढ़ककर औंधे पड़े हुए थे। उनकी यह विरह व्यथा श्रीश्रीलगुरुपादपद्मके अतिरिक्त समझे कौन ? सान्त्वना भी दे तो कौन ?

नित्यलीला-प्रवेशके कुछ दिन पूर्व परमाराध्यतम श्रीश्रीलगुरुदेव कलकत्तेमें श्रीकृष्ण गोपाल वसु महोदयके ११, प्रभुराम सरकार लेनस्थ वास-भवनमें पधारे थे। उस समय श्रीकृष्ण गोपाल वसु महोदयने निःस्वार्थ रूपसे तन-मन-धनसे सर्वप्रकारसे सपार्षद श्रीश्रीलगुरुपादपद्मकी जो अतुलनीय सेवा की है, वह वैष्णव-जगतमें आदर्श है। श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिके सेवक वर्ग उनके चिरकृतज्ञ रहेंगे। डा० एन. आर. कोनार, डा० एस. एस. बैजल, डा० राय, डा० सत्यरंजन मजुमदार, डा० एस. के. दास (सीनियर), डा० दास (जूनियर) आदि प्रधान-प्रधान चिकित्सकोंने श्रीश्रीलगुरुपद्मके श्रीअङ्गोंकी जो विशेष प्रयत्नके साथ परिचर्या की है, हम उनके चिरकृतज्ञ रहेंगे। श्रीविमल चन्द्र पोद्दारने श्रीश्रीलगुरुदेवकी जो तन-मन-धनसे निष्कपट स्वार्थरहित सेवा की है, हम उनके चिरऋणी रहेंगे। इसके अतिरिक्त और भी जिन-जिन सज्जनोंने किसी भी प्रकारसे श्रीश्रीलगुरुपादपद्मकी सेवा की है—उनके समाधि-पीठकी सेवा की है, हम उन सबके प्रति आन्तरिक कृतज्ञता ज्ञापन कर रहे हैं। प्रतिदिन नियमित रूपसे श्रीश्रीलगुरुपादपद्मके समाधि-पीठमें उनकी नित्य पूजा-अर्चना, भोग राग और आरति आदि सम्पादित हो रहे हैं।

—परमाराध्यतम श्रीश्रीलगुरुपादपद्मकी कृपालेशप्रार्थी जनैक विरही

विरह महोत्सवका निमंत्रण-पत्र

श्रीश्रीगुरुगौराङ्गौ जयतः

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति

श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ
तेघरिपाड़ा, पो०-नवद्वीप (नदिया)
ता० ९-१०-६८

श्रीवैष्णवचरणोंमें दण्डवन्नतिपूर्वक
सादर संभाषणपूर्वक निवेदन

गत ६-१०-६८ रविवार रात्रि ६-१५ मि. पर अस्मदीय परमाराध्यतम **श्रीश्रील गुरुपादपद्म ॐविष्णुपाद परमहँस स्वामी १०८ श्रीश्रीमद्भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज** नित्यलीलामें प्रविष्ट हो गए हैं। तदुपलक्ष्यमें आगामी २ कार्तिक, १९ अक्टूबर १९६८ ई. शनिवार को तदीय विरह महोत्सव एवं विरह-सभाका आयोजन किया जा रहा है। इसके उपलक्ष में हम जैसे अयोग्य एवं सेवकवृन्दको सर्व प्रकारसे पाल्य समझकर कृपापूर्वक आपके शुभागमनकी एकान्त भावसे प्रार्थना है। पत्रद्वारा निमंत्रणके लिये क्षमा प्रार्थी हैं।

शुद्धभक्तकृपालेश प्रार्थी, सभ्यगण
श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति

नित्यलीला प्रविष्ट ॐविष्णुपाद १०८ श्रीश्रीमद् गुरुदेवकी स्मृतिमें विरह-महोत्सव एवं

विरह-सभा

गत २ कार्त्तिक, १९ अक्टूबर, शनिवारको परमाराध्यतम नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद १०८ श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजका विरह महोत्सव एवं विराट विरह-सभा श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ, श्रीधाम नवद्वीपमें बड़े समारोहके साथ सुसम्पन्न हुआ है। उक्त दिवस ब्राह्म मुहूर्त्त में 'श्रीसमाधि मन्दिर' में श्रीश्रीगुरुपादपद्मकी मङ्गलारतिके पश्चात् श्रीश्रीगुरु-गौराङ्ग - राधाविनोदबिहारी एवं श्रीकोलदेवकी मंगलारति, श्रीमन्दिर द्वयके साथ-साथ श्रीतुलसी परिक्रमा करके उषा-कीर्तन, पाठ-प्रवचन एवं कीर्तन आदि सम्पन्न हुए। तत्पश्चात् मठके उत्साही सेवकोंने श्रीसमाधिमन्दिर, श्रीमूलमन्दिर, श्रीनाट्य-मन्दिर तथा सुवृहद् मठ-प्राङ्गणको विविध प्रकारके पुष्पों, केलेके वृक्षों, अशोक एवं आम्र-पल्लवों, मंगल कलशों, बन्दनवारों, रंग-बिरंगे विविध प्रकारके मूल्यवान वस्त्रों तथा ध्वजा-पताकाओं और विद्युत् उपकरणोंसे सुसज्जित करना आरम्भ किया। शीघ्र ही चारों ओर सर्व प्रकारके मांगलिक चिह्न श्रद्धालुजनोंकी दृष्टिको आकर्षण करने लगे।

तीन-चार दिन पहलेसे ही बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, आसाम, उड़िसा आदि भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशोंसे श्रीगुरुदेवके चरणाश्रित भक्तवृन्द श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठमें एकत्रित होने लगे। श्रीमठके विराट प्राङ्गणमें सहस्रों श्रद्धालुजनोंके आवासस्थल तथा महाप्रसादकी सुव्यवस्था पहलेसे ही ठीक कर ली गयी थी। जगह-जगह सुश्रृङ्खलरूपसे तम्बू और शामियानोंकी व्यवस्था थी।

उक्त दिन सबेरे ८ बजे श्रीहरिकीर्त्तन नाट्य मन्दिरमें त्रिदिण्डस्वामी श्रीभक्तिवेदान्त पर्यटक महाराज तथा श्रीमुकुन्दगोपाल ब्रह्मचारीके मूल गायकत्वमें श्रीगुरुवन्दना, श्रीगुरु-परम्परा, वैष्णव वन्दना, पंचतत्त्व तथा महामन्त्र कीर्त्तन होने लगा। पूर्वाह्न १० बजे प्रपूज्यचरण परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिदयित माधव महाराज, परिव्राजकाचार्य श्रीमद्भक्तिप्रमोद पुरी महाराज, परिव्राजकाचार्य श्रीमद्भक्ति श्रीरूप सिद्धान्ती महाराज, श्रीमद्भक्तिविलास भारती महाराज श्रीमद्भक्तिविकाश ऋषिकेष महाराज, श्रीमद्भक्तिप्रापन दामोदर महाराज, श्रीमद्-

भक्तिवेदान्त परिव्राजक महाराज, श्रीमद्भक्ति वेदान्त शुद्धाद्वैती महाराज, श्रीमद्भक्तिरंजन पद्मनाभ महाराज, श्रीमद्भक्ति अमृत अवधूत महाराज, श्रीमद्भक्ति शेखर निश्किञ्चन महाराज तथा श्रीपाद वनविहारी बाबाजी महाराज आदि वैष्णवाचार्यों तथा वैष्णवोंके द्वारा श्रीसमाधि पीठके ऊपर पुष्पाञ्जलि अर्पित किये जाने पर श्रीश्रीगुरुदेवके चरणाश्रित त्रिदण्डि संन्यासीवृन्द, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ एवं गृहस्थ भक्तवृन्द तथा उपस्थित सहस्रों श्रद्धालु नर-नारियोंने पुष्पाञ्जलि अर्पण की। पुष्पाञ्जलि प्रदान करते समय बीच-बीचमें श्रीश्रीगुरुदेव की गगनभेदी जयध्वनि और शंख-ध्वनिसे मठ प्राङ्गण परिव्याप्त हो उठता था।

लगभग १२ बजे दिनमें पुष्पाञ्जलिका अनुष्ठान सम्पन्न होने पर श्रीश्रीसमाधिमन्दिरमें तथा मूल मन्दिरमें श्रीश्रीगुरु-गौराङ्ग-राधा-विनोदविहारीजी–श्रीकोलदेवका मध्याह्निक भोग-राग तथा भोगारति सम्पन्न होनेपर निमन्त्रित-अनिमन्त्रित लगभग ५००० (पाँच हजार) श्रद्धालु जनोंको विविध प्रकारका सुस्वादु महाप्रसाद भोजन कराया गया।

उसी दिन अपराह्न ४ बजे श्रीहरिकीर्तन नाट्य मन्दिरमें पूर्व निर्णयके अनुसार एक महती विरह-सभाका आयोजन किया गया। प्रथम श्रीमुकुन्दगोपाल ब्रह्मचारी के मूल गायकत्वमें गुरु-वन्दना, गुर्वष्टक, पंचतत्त्व तथा महामन्त्र कीर्तनके पश्चात् सभापति और प्रधान अतिथिवरणका अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। पूर्व-निर्णयके अनुसार परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी १०८ श्रीश्रीमद्भक्ति रक्षक श्रीधर गोस्वामी महाराजको आजके विरह-सभाका सभापति निर्वाचित किया गया था। परन्तु अत्यधिक अस्वस्थताके कारण उनकी अनुपस्थितिमें उनकी इच्छानुसार तथा श्रीमद्भक्ति वेदान्त त्रिविक्रम महाराजके प्रस्ताव और श्रीमद्भक्ति वेदान्त नारायण महाराजके सर्वान्तःकरणयुक्त समर्थनसे परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिदयित माधव महाराजजीने सभापतिका आसन अलंकृत किया। तत्पश्चात् श्रीमद्भक्ति वेदान्त वामन महाराज, के प्रस्ताव और श्रीमद्भक्ति वेदान्त पर्यटक महाराजके समर्थनसे नवद्वीपके प्रमुख नागरिक श्री·····गोस्वामीने प्रधान-अतिथिका आसन ग्रहण किया। तदुपरान्त श्रीसभापति महाराज प्रधान अतिथि महोदय और त्रिदंडिचरणोंको माल्य-चन्दनसे विभूषित किया गया। इसके बाद श्रीमद्भक्ति वेदान्त उर्द्ध्वमन्थी महाराज, द्वारा मंगलाचरणके रूपमें उन्हींके द्वारा रचित 'श्रीश्रीमद्भक्ति प्रज्ञान केशव दशकम्' का मधुर-स्वरसे पाठ किये जाने पर सभाका कार्य आरम्भ हुआ।

सबसे पहले प्रधान-अतिथि महोदयने श्रीगुरुदेवके अतिमर्त्य जीवन चरित्रके कतिपय वैशिष्ट्यों पर प्रकाश डालते हुए एक संक्षिप्त किन्तु सुन्दर भाषण प्रदान किया। तत्पश्चात्

श्रीश्रीगुरुदेव द्वारा प्रतिष्ठित श्रीगौड़ीय वेदान्त चतुष्पाठीके प्रधानाचार्य श्रीआशुतोष पंचतीर्थ महोदयने श्रीश्रीगुरुदेवके आचार-विचार तथा प्रचार-वैशिष्ट्यके सम्बन्धमें एक पाण्डित्यपूर्ण मर्मस्पर्शी भाषण देनेके पश्चात् शारदीय रासपूर्णिमा-तिथिमें श्रीश्रीगुरुदेवके नित्य-लीलाविष्कारका शास्त्र-संगत एक ऐसा सुन्दर सरस विचार प्रस्तुत किया,जिससे श्रोतृमण्डली धन्य-धन्य कर उठी।

तदनन्तर परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिप्रमोद पुरी महाराज, श्रीमद्भक्ति विलास भारती महाराज, श्रीमद्भक्ति विकाश ऋषिकेश महाराज और श्रीमद्भक्तिप्रापन दामोदर महाराजने क्रमशः श्रीश्रीगुरु महाराज के अतिमर्त्य चरित्रके विविध पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए अपने भावपूर्ण व्याख्यानोंसे श्रोतृमण्डलीको भाव-विह्वल कर दिया।

तत्पश्चात् सभापति महाराजके निर्देशसे श्रीगौड़ीय मिशन, बागबाजार कलकत्तेके आचार्य प्रपूज्यचरण श्रीमद्भक्ति केवल औडु-लोमी महाराज, श्रीचैतन्य मठ, मायापुरके आचार्य प्रपूज्यचरण श्रीमद्भक्ति विलास तीर्थ महाराज, प्रपूज्यचरणश्रीमद् भक्तिभूदेव श्रौति महाराज, प्रपूज्यचरण श्रीमद्भक्तिसौरभ भक्तिसार महाराज, श्रीमद्भक्ति प्रकाश पुरी महाराज (विशाखापट्टन गौड़ीय मठके) तथा दूसरे-दूसरे भक्तजन जो विशेष कारणवश विरह सभामें सम्मिलित नहीं हो सके थे, उनके द्वारा प्रेरित तार या पत्रके माध्यमसे प्राप्त संवेदनाएँ तथा पुष्पाञ्जलियाँ सभामें पाठ की गयीं।

तदनन्तर श्रीसभापति महोदयने श्रीगुरुदेव के अप्राकृत जीवन चरित्रके विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए अतीव सुन्दर उपदेश-पूर्ण व्याख्यान दिया। उन्होंने आचार्य एवं अन्य गुरुसेवकोंके दायित्व, कर्तव्य तथा पर-स्परके प्रति व्यवहार तथा सबको मिल-जुल कर श्रीश्रीगुरुदेवके मनोऽभिष्टकी पूर्ति करनेके सम्बन्धमें विविध प्रकारके अमूल्य उपदेश प्रदान कर विरह-व्यथित गुरु-सेवकोंके हृदयमें नया उत्साह एवं बलका संचार कर दिया। तत्पश्चात् श्रीश्रीगुरुदेव द्वारा गत ४-१०-६८ के संपादित निरूपण एवं व्यवस्था पत्रके अनुसार तथा उक्त व्यवस्था और निरूपण पत्रमें निर्दिष्ट परिचालक समितिके द्वादश सदस्योंके द्वारा उनके ता. १८-१०-६८ के अधिवेशनमें सर्व सम्मतिद्वारा गृहीत मन्तव्यके अनुसार सभापति महाराजने त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्ति वेदान्त वामन महाराजजीको श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिका सभापति आचार्य घोषित कर उनका माल्य चन्दनसे अभिषेक किया। उपस्थित समस्त श्रोतृमण्डलीने जयध्वनिके साथ इस घोषणाका सर्वान्तःकरणसे समर्थन किया।

तदनन्तर सभापति महाराजने श्रीगुरुदेव द्वारा संपादित उक्त निरूपण और व्यवस्थापत्रमें निर्दिष्ट द्वादश सदस्योंके नाम तथा तदनुसार

गठित परिचालक समितिके द्वादश सदस्योंके ता. १८-१०-६८ ई. के अधिवेशनमें सर्वसम्मति से गृहीत मन्तव्यके अनुसार उन बारहों सदस्योंके नाम सदस्योंके पदाधिकार तथा कर्तव्यकी घोषणा भी की, जो इस प्रकार है—

	पदाधिकार एवं कर्तव्य
१. त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त वामन माहराज—	सभापति आचार्य (प्रेसिडेण्ट);दीक्षादान, मठ मन्दिरोंका पर्यवेक्षण एवं प्रचार और प्रचार कार्य पर्यवेक्षण ।
२. ,, ,, नारायणमहाराज—	उपसभापति (वाइस प्रेसिडेण्ट); प्रचार, श्रीभागवतपत्रिकाका सम्पादन और प्रकाशन विभाग विशेषत: हिन्दी विभागका परिचालन ।
३. ,, ,, त्रिविक्रम महाराज—	साधारण सम्पादक (जेनरल सेक्रेटरी); श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति की सम्पत्तिका संरक्षरण और सभी प्रकारसे परिचालन तथा आय-व्यय हिसाबका पर्यवेक्षण ।
४. ,, ,, हरिजन महाराज—	सहकारी सम्पादक; जनरल सेक्रेटरीको सब विषयोंमें सहायता देना ।
५. त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद्भक्ति वेदान्त उद्धव मन्थी महाराज	सहकारी सम्पादक; जेनरल सेक्रेटरीको सब विषयोंमें सहायता करना
६. ,, ,, पर्यटक महाराज—	जेनरल सुपरिटेण्डेण्ट; देखरेख और प्रचार
७. ,, ,, त्रिदण्डि ,, —	प्रचार सम्पादक
८. श्रीकृष्ण कृपा ब्रह्मचारी—	कोषाध्यक्ष
९. श्रीनवयोगेन्द्र ब्रह्मचारी—	हिसाब रक्षक; बँगला पत्रिका और ग्रन्थादि के प्रकाशन कार्यके भार प्राप्त

१०. श्रीवृषभानु ब्रह्मचारी
११. श्रीहरिपद दासाधिकारी } सदस्य
१२. श्रीनारायणचन्द्र दासाधिकारी

इसके पश्चात् सभापति महोदयने परिचालक समितिके १८ अक्टूबर १९६८ के अधिवेशनमें सर्वसम्मतिसे गृहीत मन्तव्यके अनुसार गठित सहकारी समितिके सदस्योंकी निम्नलिखित नाम-तालिकाका सभास्थलमें पाठ किया—

१. त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्ति वेदान्त परिव्राजक महाराज
२. ,, ,, शुद्धाद्वैती ,,
३. ,, ,, विष्णुदैवत ,,
४. ,, ,, न्यासी ,,
५. श्रीमद् पुरुषोत्तमदास बाबाजी महाराज
६. ,, वंशीवदनानन्द ,, ,,
७. श्रीमुकुन्द गोपाल ब्रह्मचारी
८. श्रीहरिसाधन ,,
९. श्रीगजेन्द्र मोक्षण दासाधिकारी
१०. ,, वृन्दावनविहारी दास ब्रह्मचारी
११. ,, रसिक रंजन ब्रह्मचारी
१२. ,, निमाईचन्द्र ,,
१३. ,, सुदर्शन ब्रह्मचारी
१४. ,, विश्वरूप ब्रह्मचारी
१५. ,, स्वाधिकारानन्द ,,
१६. ,, गजेन्द्र मोचन ,,
१७. ,, कुंज विहारी ,,
१८. ,, कृष्णस्वामी दास ब्रह्मचारी
१९. ,, मुरलीमोहन ,,
२०. ,, हरिहर ,,
२१. ,, कानाईलाल ,,
२२. ,, दीनदयार्द्र ,,
२३. ,, राधामाधव ,,
२४. ,, गौरेन्दु दासाधिकारी
२५. ,, मधुसूदन विद्यानिधि
२६. ,, रामगोपाल ब्रह्मचारी
२७ ,, दयालहरि ब्रह्मचारी
२८. ,, श्रीराधाश्याम साहा
२९. ,, सुधीरचन्द्र साहू

तदनन्तर त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद्भक्ति वेदान्त वामन महाराज, त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद् भक्तिवेदान्त नारायण महाराज, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त त्रिविक्रम महाराज तथा त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त पर्यटक महाराजने एक-एक संक्षिप्त किन्तु विरह ज्ञापक मर्मस्पर्शी भाषण दिये।

अन्तमें त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण महाराज द्वारा विरह-सभामें तथा विरहोत्सवमें सम्मिलित होनेके लिये पूज्यपाद सभापति महाराज, प्रधान-अतिथि महोदय, पूजनीय त्रिदण्डि संन्यासीवृन्द एवं समस्त श्रद्धालु वक्ताओं एवं श्रोताओंके प्रति कृतज्ञता और धन्यवाद ज्ञापन किये जानेपर महामन्त्र कीर्त्तनके पश्चात् विरह - सभाका प्रथम अधिवेशन पूर्ण सफलताके साथ समाप्त हुआ।

दूसरे दिन २० अक्टूबर १९६८ ई. संध्याके समय द्वितीय विरह-सभा सम्पन्न हुई। उक्त दिवस प्रपूज्यचरण श्रीमद्भक्ति प्रापन दामोदर महाराजके सभापतित्वमें गत दिवसकी विरहसभामें अपठित विरह-कुसुमाञ्जलियोंका पाठ किया गया। तदनन्तर त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त शुद्धाद्वैती महाराज, श्रीमद्-हरिजन महाराज, श्रीमद्उर्द्ध्वमन्थी महाराज, श्रीमद् त्रिदण्डि महाराज, श्रीकृष्णकृपा ब्रह्मचारी, श्रीनवयोगेन्द्र ब्रह्मचारी, श्रीवृषभानु ब्रह्मचारी, श्रीहरिहर ब्रह्मचारी, श्रीसुदर्शन ब्रह्मचारी, श्रीवृन्दावनविहारीदास ब्रह्मचारी, श्रीमुरलीमोहन ब्रह्मचारी, श्रीमधुसूदन विद्यानिधि, श्रीविमलचन्द्र पोद्दार तथा अन्यान्य त्रिदण्डि संन्यासी-ब्रह्मचारियोंने श्रील गुरुपादपद्मोंके अतिमर्त्य जीवन-चरित्रकी विभिन्न स्मृतियों, उपदेशों तथा प्रचारादि वैशिष्ट्योंके ऊपर सुन्दर रूपसे प्रकाश डाले।

इस प्रकार श्रील गुरुपादपद्मोंका भुवन-मंगलमय विरह-महोत्सव तथा विरह-सभाका अधिवेशन महासमारोहके साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

—निजस्व सम्वाददाता

संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाके विभिन्न नगरोंमें

श्रीश्रीगुरु महाराजकी स्मृतिमें

विरह-सभा

[पूज्यपाद त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त स्वामी महाराजजी ने कुछ वर्षोंसे संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, कैनाडा तथा युरोपके विभिन्न देशोंमें श्रीचैतन्य महाप्रभुद्वारा आचरित-प्रचारित शुद्धा कृष्ण-भक्तिका प्रबल रूपसे प्रचार कर वहाँके भोग-प्रधान समाजमें उथल-पुथल मचा दिया है। हजारों लोग (परिवार-के-परिवार) माँस-मछली, प्याज-लहसुन, अण्डे, शराब आदि मादक द्रव्य तथा सब प्रकारके धूम्रपान आदिका सर्वथा परित्याग करके शुद्ध गृहस्थ जीवनमें या ब्रह्मचर्य धारणकर मठ जीवनमें रहकर भगवद् भजन कर रहें हैं। वे लोग चोटी, तिलक, तुलसीमाला और यज्ञोपवीत धारण करनेमें भारतीयोंकी भांति लज्जा और घृणा न कर गौरव बोध करते हैं। वे लोग टोलियाँ बनाकर पाश्चात्य देशोंके विभिन्न नगरोंमें हरिनाम कीर्तन करते हुए कृष्ण-भक्ति और हरिनामका सर्वत्र प्रचार करते हैं। न्यूयार्क, सैनफ्रैंसिस्को, मांट्रियल, और कैनाडाके विभिन्न नगरोंमें लगभग दस प्रचार-केन्द्र स्थापित हो चुके हैं। स्वामीजीने १९२२ ई० में जगद्गुरु श्रील सरस्वती गोस्वामीसे दीक्षा मंत्र ग्रहण किया था तथा १९५९ ई० में ॐविष्णुपाद श्रील भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजसे श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरामें संन्यास ग्रहण कर श्रीगीता और श्रीमद्भागवतका अंग्रेजी भाषामें अनुवाद कर तथा अंग्रेजी भाषामें अनेकों ग्रन्थों का सृजन कर लगभग छः सात वर्षोंसे पाश्चात्य देशोंमें विराट रूपसे प्रचार कर रहे हैं। उन्हींके एक पत्रका यहाँ अनुवाद प्रकाशित किया जा रहा है। ॐविष्णुपाद श्रीश्रील भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामीके नित्यलीलामें प्रविष्ट होनेपर अमेरिका स्थित स्वामीजीके समस्त प्रचार केन्द्रोंमें विरहोत्सव मनाया गया है तथा उनके श्रीचरणकमलोंमें पुष्पांजलियाँ अर्पित की गयीं हैं। उनमें से दो को यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है— सम्पादक]

श्रीश्रीगुरुगौराङ्गौ जयतः

सीटिल, वाशिटन
२२ अक्टूबर १९६८

श्रीश्रीवैष्णवचरणोंमें दण्डवन्नति पूर्विकेयम्

श्रीपाद त्रिविक्रम महाराज ! आपका दिनांक १२ अक्टूबरका पत्र गत कल प्राप्त होकर मर्म्माहत हुआ। पूज्यपाद महाराज अकस्मात् कैसे अप्रकट हो गए--जानना चाहता हूँ। श्रील महाराजके साथ बहुत पूर्वसे ही मेरा घनिष्ठ सम्पर्क रहा है। श्रीधाम मायापुर जाने पर श्रीपाद नरहरि दादा और श्रीपाद विनोद दादा अत्यन्त स्नेह करते थे। वे मेरे अत्यन्त प्रेमास्पद थे। साथ ही कलकत्तेमें पुरातन तीर्थ महाराज, प्रोफेसर निशिकान्त संन्याल एवं वासुदेव प्रभु-ये मेरे अत्यन्त अन्तरंग थे। पीछे श्रीपाद श्रीधर महाराजके साथ परमात्मीयके रूपमें मिलना-जुलना होता था। श्रीपाद श्रीधर महाराजके अतिरिक्त उक्त वैष्णवजनोंमें से सभी क्रमशः अप्रकट हो गये। हमलोगोंका समय भी सन्निकट है, जितने दिनोंतक श्रील प्रभुपादकी सेवा करनेका सुयोग मिले, उतना ही अच्छा है।

श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिसे मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध है। आपलोग, विशेष करके श्रीपाद वामन महाराज निश्चय ही जानते हैं कि श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिकी स्थापना जिन तीन व्यक्तियोंने की थीं, उनमें मैं भी एक हूँ। कलकत्ता बोसपाड़ा लेनमें श्रील महाराजके संन्यास ग्रहणसे पूर्व ही हमारी श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति स्थापनाकी कल्पना हो चुकी थी। समितिकी स्थापना होनेके कुछ दिनोंके पश्चात् श्रीनरोत्तमानन्द ब्रह्मचारीके (वर्तमान त्रिदण्डिस्वामी श्रीश्रीमद्भक्ति कमल मधुसूदन महाराज) के पृथक् होनेपर श्रीपाद वामन महाराज (उस समय ब्रह्मचारी) हमारे सीताकान्त बनर्जी वाले घर पर उपस्थित होकर मुझे श्रीगौड़ीय पत्रिकाका संघपति कर गये। श्रील महाराज की आज्ञा शिरोधार्य करके मैं नियमित रूपसे गौड़ीय पत्रिकाके लिए प्रबन्ध दिया करता था। मैं जो कुछ लिखता, श्रील महाराज उसे अत्यन्त पसंद करते। तदनन्तर हिन्दी "श्रीभागवत पत्रिका" में भी मैं संघपति नियुक्त हुआ। उसमें भी मेरे अनेकों प्रबन्ध प्रकाशित हुए थे। पीछे समयाभावके कारण प्रबन्ध न दे सका और अब तो विदेशवासी हो गया, वर्ष में लगभग २०००० मील भ्रमण करना पड़ता है।

श्रील केशव महाराजकी सर्वाधिक करुणा है, मुझे संन्यासी करना। मेरी यह प्रतिज्ञा थी कि मैं कदापि संन्यास ग्रहण न करूँगा।

परन्तु श्रील महाराजजीने मुझे जबरदस्ती संन्यास प्रदान किया। आज वे मेरे प्रचार साफल्यको देखकर निश्चय ही परमानन्दित हुए हैं; क्योंकि पिछले वर्ष कलकत्तेमें जिस समयमें अपने शिष्योंके साथ उनके दर्शनोंके लिए गया था, उस समय वे शय्याशायी होने पर भी अत्यन्त आनन्दित हुए थे। मेरा यह विश्वास है कि वे प्रकट या अप्रकट उभय अवस्थामें ही मेरे द्वारा अमेरिका, कनाडा, इङ्गलैंड, जर्मनी एवं प्रशान्त महासागरस्थित हनलूलू, जापान (टोकियो) आदि पाश्चात्य एवं पूर्वीय जगतमें श्रीमन्महाप्रभुकी वाणीका व्यापकरूपमें प्रचार हो रहा है—देखकर अवश्य ही परमानन्दित हो रहे होंगे।

मैं अतिशय गृहमेधी व्यक्ति था। श्रील प्रभुपाद (श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर) बीच-बीचमें स्वप्न दिया करते थे कि गृह त्यागकर उनके निकट चला जाऊँ। ऐसे स्वप्नको देखकर मुझे अत्यन्त भय होता कि मुझे संन्यास ग्रहण करना पड़ेगा। अर्थात् संन्यास ग्रहण करनेकी मेरी तनिक भी इच्छा न थी। परन्तु श्रीपाद नारायण महाराजकी प्रचेष्टासे श्रील केशव महाराजने मुझ सदृश अनभिप्सु अन्धको जोरपूर्वक संन्यास देकर मुझपर अतुलनीय कृपा की थी। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि श्रीलप्रभुपादकी इच्छा उनके अन्दर प्रेरित होकर मेरा यह संन्यास-सिद्ध हुआ था।

अस्तु, मैं श्रील महाराजके निकट चिर-कृतज्ञ हूँ। इसीलिए आपका पत्र पाते ही हमने उसी समय सीटिल (वाशिंगटन) स्थित मंदिर में विरह-सभाका आयोजन करके जो Condolence resolution किया है, उसे इस पत्रके साथ भेज रहा हूँ। इसे हमारी श्रद्धांजलिके रूपमें ग्रहण करेंगे। अपने अन्यान्य केन्द्रोंमें भी (जिनकी तालिका साथ भेज रहा हूँ) मैंने इसी प्रकार श्रद्धांजलि प्रदान करनेके लिए निर्देश दिया था। विशेषतः लण्डन, हैंमबर्ग (जर्मनी) एवं हनलूलू (हवायी द्वीप) में विरह सभाका आयोजन करनेके लिए लिखा था।

आपको यह जानकर खुशी होगी कि अमेरिकाके नवयुवक और नवयुवतियों (पति-पत्नी) की मेरे अधीन तीन संकीर्तन मण्डलियाँ गठित हुई हैं। इनमेंसे एक मण्डली इस समय अमेरिकाके सभी शहरोंमें भ्रमण कर रही है। इस मण्डलीके साथ मैं भी हूँ। दूसरी मंडली (छः व्यक्ति) लंडनमें स्थान-स्थान पर कीर्तन कर रही है। वहाँके भारतीय यह देखकर आश्चर्य चकित हुए हैं कि वे लोग सब कुछ छोड़छाड़कर विलायतमें बड़े साहब बननेके लिये गये हैं और अमेरिकाके लोग हरिनाम संकीर्तन कर रहे हैं। जैसा भी हो, प्रचार-कार्य सुन्दर रूपसे चल रहा है। आप लोग किस प्रकारसे Constitution गठन कर रहे हैं—जाननेकी इच्छा है। इस विषयमें आपलोग

मेरी पूर्ण सहयोगिता प्राप्त होंगे। क्योंकि मैं Constructive idea का व्यक्ति हूँ। Distructive Policy मुझे अभिप्रेत नहीं है।

श्रीलप्रभुपाद और श्रीलभक्तिविनोद ठाकुर की इच्छा थी कि अमेरिकाके लोग श्रीधाम मायापुरमें कीर्त्तन करें। वह सुयोग आज उपस्थित हो गया है। परन्तु आज मायापुरमें जो दखल करके जमे हुए है, वे उसे अपनी खास सम्पत्ति बना रखे हैं। आजकल वहाँ दूसरोंका आना-जाना निषिद्ध है। श्रील महाराज (श्रील केशव महाराज) इन गुरु-त्यागी और गुरु-भोगी—उभय सम्प्रदायोंके प्रति खड्गहस्त थे। जैसा भी हो, उन्होंने गतवर्ष यह कहा था कि वे मेरे लिए श्रीधाम मायापुरमें पाँच बिघा जमीनकी व्यवस्था कर देंगे। आपलोग उस समय उपस्थित थे। यदि आपलोग इस विषयमें मेरी सहायता करें, श्रीधाम मायापुरमें एक आश्रम करूँ। वहाँ पर अमेरिकाके नवयुवक-नवयुवतियाँ जाकर रहें और उचित शिक्षा लाभ कर सकें। हमलोगोंके साथ योग-स्थापन करके कार्य करनेसे सुन्दर रूपसे प्रचारकार्य हो सकता है। इसलिये आपलोग कैसा Constitution कर रहे हैं—जानना चाहता हूँ।

मैं कल Montreal जा रहा हूँ। वहाँसे Santa Fe (New Mexico) जाऊँगा। और वहाँसे Los-Angeles जाऊँगा। हम लोगोंके विभिन्न केन्द्रोंके पताके कार्ड इस पत्र के साथ ही भेज रहा हूँ। वहाँ ३०० बीघे जमीनके ऊपर "न्यू-वृन्दावन" का निर्माण हो रहा है। आप Los-Angeles Holy-wood के पते पर पत्रोत्तर देंगे। क्योंकि मैं Montreal में तीन दिन ठहरूँगा, Santa Fe में सात दिन ठहरूँगा, Los-Angeles महिने भर ठहरूँगा। "पृथिवीते आछे जत नगरादि ग्राम। सर्वत्र प्रचार हइबे मोर नाम।" —इस पद्धतिसे सारे विश्वमें प्रचार कार्य प्रबल रूपसे सम्भव हो सके,—इसीके अनुरूप सरलरूपसे Constitution गठन करेंगे। आशा करता हूँ आपलोगोंका भजन-कुशल है॥ इति॥

वशंवद—

श्रीभक्ति वेदान्त स्वामी

पुनश्च—

यदि श्रील महाराजजीका कोई बढ़िया फोटोग्राफ हो तो भेजेंगे। मैं Life Size oil Painting प्रस्तुत कराकर श्रीप्रभुपादके साथ अपने प्रधान-प्रधान केन्द्रोंमें विशेषत: New york, Holy wood, London आदि स्थित केन्द्रोंके मन्दिरोंमें पधराऊँगा।

———

INTERNATIONAL SOCIETY FOR KRISHNA
CONSCIOUSNESS, INC.

518, Frederick Street, San Francisco, California 94117.
5516, Roosevelt Way, N. E. Seattle, Washington 98105.

Telephone : 731—9671

Oct. 21, 1968

Acharya : Swami A. C. Bhakti Vedanta

Resolved that we the undersigned members and devotees of the International Society for Krishna Consciousness, Inc., in a condolence meeting under the Presidency of His Divine Grace A. C. Bhakti Vedanta Swami to-day, the 21st October 1968, at our Seattle Branch, express our profound bereavement on hearing the disappearance of His Divine Grace Om Vishnupad 108 Sri Smd. Bhakti Prajnan Keshav Goswami Maharaj (the Sanyas Guru Preceptor of our Spiritual Master), as on October 6, 1968, at his Headquarter residence in Nabadip, West Bengal, India.

We offer our respectful obeissances unto the Lotus Feet of Om Vishnupad Sri Srimad 108 B. P. Keshav Goswami Maharaj with the following Verse Composed on this occasion by our Spiritual Master:—

वैराग्यविद्यानिजभक्तियोगं अपाययत् मां अनभिप्सुमन्दम् ।
श्रीकेशव भक्तिप्रज्ञान नामा कृपाम्बुधिर्यस्तमहं प्रपद्ये ॥

Sd.—A. C. Bhakti Vedanta Swami

The following members and devotees here present at the meeting:—

(1) Mrs. Boni Mc Elroy, (2) Mr. Thimas Hegig, (3) Mr. Mark D Attilo, (4) Mr. Kolert Cusimano, (5) Mrs. Hope Carter, (6) Mr. John and Gaster. (7) Mr. James P. Kolu, (8) Mr. Joy Fulcher, (9) Mr. Breat T. Seldon, (10) Mr. Nathan Barueli Zakheim, (11) Mr. Michael C. Morrisseo, (12) Mr. Sherrie Schweitzer, (13) Mr. Curis Jackson, (14) Srimathi Govindadevidasi, (15) Srimathi Madhavilatadevi dasi (16) Srimathi Srimathidasi. (17) Sri Amal Krishnadas Brahmachari, (18) Sri Vishnujanadas Brahmachari, (19) Sri Kebatinandandas Brahmachari, (20) Srimathi Harsharanidevi dasi, (21) Sri Jivananda Dasadhikari. (22) Jayanandadas Brahmachari, (23) Sri Sudamadas Brahmachari, (24) Sri Nara Narayandas Brahmachari, (25) Sri Upendra das Brahmachari, (26) Madhudwisadas Brahmachari, (27) Sri Kartikeyadas Brahmachari and (28) Sri Jai Gopaldas Brahmachari.

INTERNATIONAL SOCIETY FOR KRISHNA CONSCIOUSNESS, INC.

Twenty six, Second Avenue, Newyork, N. Y. 10003.
Acharya : Swami A C. Bhakti Vedanta

Telephone : 674—7428
Montreal (Canada)

Resolved, we the undersigned members and devotees of the International Society for Krishna Consciousness, Radha Krishna Temple, 3720 of October Park Avenue, Montreal, Canada, this day the 25 the October 1968 a Condolence meeting under the Presidency of His Divine Grace Sri Srimad A. C. Bhakti Vedanta Swami express our profound bereavement on the disappearance of His Divine Grace Om Vishnupad 108 Sri Srimad Bhakti Prajnan Keshav Goswami Maharaj (the Sanyas Guru Preceptor of our Spiritual Master) as on October 6, 1968 at his Nabadip residence, West Bengal. India.

Sd.—A. C. Bhakti Vedanta Swami

The following devotees were present at the meeting: –

(1) Sri Janardhan Dasadhikari, (2) Sri Advaita Dasadhikari, (3) Sri Umapada Brahmachari, (4) Sri Dayal Nityadas Brahmachari, (5) Sri Jayapatakadas Brahmachari, (6) Sri Paramananda Dasadhikari, (7) Sri Subal Dasadhikari, (8) Sri Baikunthanath Brahmachari, (9) Sri Brahmanandadas Brahmachari, (10) Sri Sachisutadas Brahmachari, (11) Sri Hansaduttadas Brahmachari, (12) Sri Rayaramadas Brahmachari, (13) Mr. Charles Scioseia, (14) Sri Gopal Krishna Khanna, (15) Mr. Paul H. Garrison, (16) Srimathi Lilavatidevi Dasi, (17) Srimathi Satyabhamadevi dasi, (18) Srimathi Himavatidevi dasi, (19) Srimathi Balai dasi, (20) Srimathi Kanchan Bala dasi and (21) Srimathi Leelasuka dasi.